

पाठ – वर्षा बहार

कविता सार

यह कविता वर्षा क्रतु की सुंदरता और जीवंतता को बहुत ही सरल और आकर्षक तरीके से दिखाती है। कवि बताते हैं कि वर्षा शुरू होते ही सबका मन प्रसन्न हो जाता है। आकाश में घने बादल छा जाते हैं और बिजली चमकती है, साथ में गरज सुनाई देती है। झरने उफान पर होते हैं और प्रकृति की खूबसूरती और बढ़ जाती है।

वर्षा क्रतु के आगमन से ठंडी और सुहावनी हवा चलती है। पेड़ों की डालियाँ हिलती हैं और बाग-बगिचों में काम करने वाले लोग खुशी से गीत गाते हैं। तालाबों और जलाशयों में मछलियाँ और कछुए पानी का आनंद लेते हैं। पपीहे खुशी-खुशी उड़ते हैं और गर्मी की तपन भूल जाते हैं।

जंगल में मोर नाचते हैं और मेंढक 'टर-टर' करके वर्षा का स्वागत करते हैं। फूल खिलते हैं, गुलाब की खुशबू चारों ओर फैलती है और बागों में सुखमय वातावरण बनता है।

आकाश में बादल ऐसे चलते हैं जैसे हंसों का झुंड उड़ रहा हो। किसान भी वर्षा से प्रसन्न होते हैं, क्योंकि यह उनके लिए खुशहाली और फसल का प्रतीक है। वे खेतों में काम करते हुए खुशी से गीत गाते हैं।

कवि कहते हैं कि वर्षा क्रतु धरती के लिए अनमोल उपहार है। यह सभी प्राणियों को आनंद, ताजगी और जीवन देती है। अगर वर्षा न हो, तो जीवन ठहर सा जाएगा और प्रकृति मुरझा जाएगी। इसलिए वर्षा को प्रकृति की सुंदरतम देन माना गया है।

वर्षा-बहार पाठ व्याख्या

1. वर्षा-बहार सब के मन को लुभा रही है।

नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं।

पानी बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं।

शब्दार्थ-

वर्षा-बहार – वर्षा क्रतु की सुंदरता, वर्षा का सौंदर्य

लुभा रही है – आकर्षित कर रही है

नभ – आकाश

छटा – दृश्य, शोभा, सुंदरता

अनूठी – अद्वितीय, एकदम अलग और सुंदर

घनघोर – घने और गहरे

छा रही है – फैल रही है

बरस रहा है – गिर रहा है (वर्षा होना)

व्याख्या – कवि बताते हैं कि वर्षा क्रतु की यह मनमोहक छटा सभी के मन को आकर्षित कर रही है। आकाश में घने काले बादलों ने अद्वितीय दृश्य रचा है। बिजली की चमक और बादलों की गड़ग़ड़ाहट वातावरण को और भी रोमांचक बना रही है। लगातार होती वर्षा से झरने उफान मारते हुए बह रहे हैं, जो दृश्य को और सुंदर बना रहे हैं।





2. चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब
बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब
तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते
फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।

शब्दार्थ-

गीत सुंदर	—	मधुर और प्यारे गीत
मालिनें	—	बागों में काम करने वाली स्त्रियाँ, माली की स्त्री
तालों	—	तालाबों
जीव जलचर	—	जल में रहने वाले प्राणी, जैसे- मछलियाँ, मेंढक आदि
अति प्रसन्न होते	—	बहुत प्रसन्न होते हैं, अत्यधिक खुश होते हैं
फिरते	—	घूमते, इधर-उधर उड़ते
लखो	—	अनेक, असंख्य
पपीहे	—	एक प्रकार का पक्षी जो वर्षा ऋतु में कूकता है
ग्रीष्म ताप	—	गर्मी की गर्म लहर या तपन

व्याख्या – कवि कहते हैं कि वर्षा ऋतु की ठंडी हवा के चलते पेड़ों की शाखाएँ हिल रही हैं। बाग-बगिचों में मालिनें प्रसन्न होकर मधुर गीत गा रही हैं। तालाबों में रहने वाले जलचर जीव आनंदित हैं और चारों ओर पपीहे घूमते हुए अपनी गर्मी की थकान को मिटाते दिख रहे हैं।

3. करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे
मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।
खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

शब्दार्थ-

नृत्य	—	नाच, नाचना
लुभा रहे हैं	—	आकर्षित कर रहे हैं, मन मोह रहे हैं
सुगीत प्यारे	—	सुंदर और मनभावन गीत
सौरभ	—	खुशबू, सुगंध
उड़ा रहा है	—	फैला रहा है
सुख से	—	आनंदपूर्वक, प्रसन्नता के साथ
आमोद	—	प्रसन्नता, सुख का वातावरण
छा रहा है	—	फैल रहा है, भर गया है

व्याख्या – कवि कहते हैं कि वर्षा के मौसम में वन के सभी मोर आनंदपूर्वक नृत्य कर रहे हैं। मेंढक अपनी टर-टर की आवाज में मनमोहक गीत गा रहे हैं। गुलाब के खिले फूल अपनी मधुर सुगंध से वातावरण को महका रहे हैं। चारों ओर वर्षा के इस सौंदर्य के सुख से प्रसन्नता की भावना छाई हुई है।





4. चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर
 गाते हैं गीत कैसे लेते किसान मनहर ।
 इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर
 सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

शब्दार्थ-

चलते हैं	- आगे बढ़ते हैं, उड़ते हुए जाते हैं
हंस	- एक प्रकार का सुंदर पक्षी, यहाँ बादलों का रूपक
कतार	- पंक्ति
मनहर	- मन को हर्षित करने वाले, मनभावन
भाँति	- प्रकार, तरह
अनोखी	- विशेष, अद्वितीय
वर्षा बहार	- वर्षा ऋतु की सुंदरता, वर्षा का सौंदर्य
भू पर	- पृथ्वी पर, धरती पर
सारे जगत	- पूरा संसार
शोभा	- सुंदरता, आकर्षण
निर्भर है	- आश्रित है, टिकी हुई है

व्याख्या- कवि कहते हैं कि आकाश में बादल ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानो सुंदर पंक्तियों में हंस उड़ रहे हों। किसान खेतों में खुशी से मधुर गीत गा रहे हैं। इस प्रकार वर्षा ऋतु अपनी विशेषता के कारण धरती पर अद्वितीय बहार लेकर आती है, और संपूर्ण जगत की शोभा इसी पर आधारित है।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उनके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1. इस कविता में वर्षा ऋतु का कौन-सा भाव मुख्य रूप से उभर कर आता है?

- दुख और निराशा
- आनंद और प्रसन्नता
- भय और चिंता
- क्रोध और विरोध

उत्तर:

- आनंद और प्रसन्नता (★)

प्रश्न 2. “नभ में छटा अनूठी” और “घनघोर छा रही है” पंक्तियों का उपयोग वर्षा ऋतु के किस दृश्य को व्यक्त करने के लिए किया गया है?

- बादलों के घिरने का दृश्य





- बिजली के गिरने का दृश्य
- ठंडी हवा के बहने का दृश्य
- आमोद छा जाने का दृश्य

उत्तर:

- बादलों के घिरने का दृश्य (★)

प्रश्न 3. कविता में वर्षा को 'अनोखी बहार' कहा गया है क्योंकि-

- कवि वर्षा को विशेष क्रतु मानता है।
- वर्षा में सभी जीव-जंतु सक्रिय हो जाते हैं।
- वर्षा सबके लिए सुख और संतोष लाती है।
- वर्षा एक अद्भुत अनोखी प्राकृतिक घटना है।

उत्तर:

- वर्षा में सभी जीव-जंतु सक्रिय हो जाते हैं। (★)
- वर्षा सबके लिए 'सुख और संतोष लाती है। (★)
- वर्षा एक अद्भुत अनोखी प्राकृतिक घटना है। (★)

प्रश्न 4. "सारे जगत की शोभा, निर्भर है उसके ऊपर" इस पंक्ति का क्या अर्थ है?

- प्रकृति में सभी जीव-जंतु एक-दूसरे पर निर्भर हैं।
- वर्षा पृथ्वी पर हरियाली और जीवन का मुख्य स्रोत है।
- बादलों की सुंदरता से ही पृथ्वी की शोभा बढ़ती है।
- हमें वर्षा क्रतु से जगत की भलाई की प्रेरणा लेनी चाहिए।

उत्तर:

- वर्षा पृथ्वी पर हरियाली और जीवन का मुख्य स्रोत है। (★)
- हमें वर्षा क्रतु से जगत की भलाई की प्रेरणा लेनी चाहिए। (★)

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग या एक से अधिक उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

उत्तर:

(विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ चर्चा करके बताएँगे कि उनके द्वारा विकल्प चुनने के क्या कारण हैं।)

1. मेरी गय में इस कविता में वर्षा क्रतु का आनंद और खुशियाँ मुख्य रूप से दिखाई देती हैं। वर्षा होने पर प्रकृति में हर जगह खुशी छा जाती है और सभी जीव-जंतु प्रसन्न दिखाई देते हैं।
2. 'नभ में छटा अनूठी' और 'घनधोर छा रही है' पंक्तियाँ वर्षा क्रतु में बादलों के घिरने का दृश्य दिखाने के लिए हैं। जब बादल आकाश में छा जाते हैं तो आकाश अनोखा और अँधेरा सा दिखाई देता है।





- मैंने इस प्रश्न के तीन विकल्प इसलिए चुने क्योंकि कविता में वर्षा को 'अनोखी बहार' कहा गया है। वर्षा एक अद्भुत प्राकृतिक घटना है, जो सबके लिए सुख और संतोष लाती है। वर्षा ऋतु में सभी जीव-जंतु सक्रिय और आनंदित रहते हैं।
- मैंने इस प्रश्न के दो विकल्प इसलिए चुने क्योंकि 'सारे जगत की शोभा, निर्भर है उसके ऊपर' का अर्थ है कि पृथ्वी की सारी सुंदरता और हरियाली वर्षा पर निर्भर करती है। वर्षा प्रकृति को हरा-भरा करती है और सभी जीवों को जीवन देती है। इसलिए हमें वर्षा ऋतु से जीवन में भलाई और आनंद की प्रेरणा लेनी चाहिए।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए-

(क) "फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते
करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारो।"

उत्तर:

वर्षा ऋतु आने पर पपीहों को गर्मी से राहत मिलती है तथा इधर-उधर उड़कर आनंद मनाने लगते हैं। वनों में सभी मोर आनंदित होकर नाचने लगते हैं अर्थात् वर्षा का स्वागत करने लगते हैं।

(ख) "चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान – मनहर।"

उत्तर:

वर्षा ऋतु के आने पर हंस पंक्तियों में चलने लगते हैं। हंसों की पंक्तियाँ प्रकृति की सुंदरता और अनुशासन को दर्शाती हैं। यह दृश्य बहुत सुंदर लगता है। किसान खेतों में प्रसन्नता से काम करने लगते हैं और मन को हरने वाले गीत गाने लगते हैं।

मिलकर करें मिलान

• कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ-1 में दी गई हैं, उनके भावार्थ स्तंभ -2 में दिए गए हैं। स्तंभ- 1 की पंक्तियों का स्तंभ -2 की उपयुक्त पंक्तियों से मिलान कीजिए-

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. पानी बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं	1. वर्षा ऋतु में तालाबों के जीव-जंतु अति प्रसन्न हैं।
2. चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब	2. वर्षा हो रही है और झारने बह रहे हैं।
3. तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते	3. वर्षा आने पर लाखों पपीहे गर्मी से राहत पाते हैं।
4. फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते	4. हंसों की कतारें प्रकृति की सुंदरता और अनुशासन को दर्शाती हैं।
5. खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है	5. वर्षा में खिले हुए फूल जैसे गुलाब प्रकृति में सुगंध और ताजगी फैला रहे हैं।
6. चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर	6. ठंडी हवाओं के कारण पेड़ों की सभी शाखाएँ हिल रही हैं।





उत्तर:

1. – 2
2. – 6
3. – 1
4. – 3
5. – 5
6. – 4

सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) कविता में कौन-कौन गीत गा रहे हैं और क्यों?

उत्तर:

कविता में मालिनें, मेंढक और किसान गीत गा रहे हैं।

- **मालिनें** बागों में हरियाली और ठंडी हवा के कारण खुश होकर गीत गा रही हैं।
- **मेंढक** वर्षा ऋतु के अपने प्रिय समय में खुशी व्यक्त कर रहे हैं।
- **किसान** अपने खेतों में पानी मिलने और अच्छी फसल होने की वजह से आनंदित होकर गीत गा रहे हैं।

इस तरह सभी जीव और लोग वर्षा ऋतु में प्रसन्न हैं और खुशी व्यक्त कर रहे हैं।

(ख) “बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं” “तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते ” दी गई दोनों पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए। इनमें वर्षा के दो अलग-अलग दृश्य दर्शाए गए हैं। इन दोनों में क्या कोई अंतर है? क्या कोई संबंध है? अपने विचार लिखिए।

उत्तर:

दी गई पंक्तियों में वर्षा ऋतु के दो अलग दृश्य दिखाए गए हैं। ये प्रकृति के दो रूप को दर्शाते हैं –

1. **आकाश का दृश्य** – इसमें वर्षा ऋतु आने की चेतावनी और ऊर्जा दिखाई गई है। जैसे बिजली चमकना और बादल घिरना।
2. **धरती का दृश्य** – इसमें वर्षा के बाद प्रसन्नता और जीवन का उल्लास दिखाई देता है। जैसे जलचर (मछलियाँ, कछुए) खुशी से रहते हैं।

इन दोनों दृश्यों में संबंध है। पहला दृश्य कारण है और दूसरा उसका परिणाम। जहाँ आकाश में बादल गरज रहे हैं, वहाँ धरती पर जीवन मुस्करा रहा है।

(ग) कविता में मुख्य रूप से कौन-सी बात कही गई है? उसे पहचानिए, समझिए और अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

(विद्यार्थी अपने विचार साझा करें।)

कविता में मुख्य रूप से यह बात कही गई है कि वर्षा ऋतु केवल प्रकृति के सौंदर्य को ही नहीं बढ़ाती है, बल्कि जीवन में नयापन और खुशहाली भी लाती है। वर्षा के आने से प्रकृति में ताज़गी, एवं नयापन ही नहीं आता है बल्कि यह





सभी जीवों के जीवन में नई ऊर्जा और प्रसन्नता का संचार भी करती है।

(घ) “खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है” इस पंक्ति को पढ़कर एक खिलते हुए गुलाब का सुंदर चित्र मस्तिष्क में बन जाता है। इस पंक्ति का उद्देश्य केवल गुलाब की सुंदरता को बताना है या इसका कोई अन्य अर्थ भी हो सकता है?

उत्तर:

‘खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है’ पंक्ति सिर्फ गुलाब की सुंदरता और खुशबूदिखाने के लिए नहीं है। यह प्रकृति के नवीनीकरण, जीवन की ताजगी और प्रेम व सुंदरता का प्रतीक भी है। इसे जीवन में खुशियाँ, प्रेम और सकारात्मक बदलाव के रूप में भी समझा जा सकता है।

(ङ) कविता में से उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमें सकारात्मक गतिविधियों का उल्लेख किया गया है, जैसे – ‘गीत गाना’, ‘नृत्य करना’ और ‘सुगंध फैलाना’। इन गतिविधियों के आधार पर बताइए कि इस कविता का शीर्षक ‘वर्षा – बहार’ क्यों रखा गया है?

उत्तर:

कविता में वर्षा क्रतु की सकारात्मक गतिविधियाँ दिखाने वाली पंक्तियाँ हैं—

- बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब
- करते हैं नृत्यवन में, देखों ये मोर सारे
- खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है

ये पंक्तियाँ बताती हैं कि वर्षा न केवल प्रकृति को सुंदर बनाती है, बल्कि जीवन में खुशी, ऊर्जा और ताजगी भी लाती है।

कविता का शीर्षक ‘वर्षा – बहार’ इसलिए रखा गया है क्योंकि यह वर्षा के मौसम में आई खुशहाली और आनंद को दर्शाता है। यह प्राकृतिक सुंदरता और जीवों की प्रसन्नता का प्रतीक है।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए-

(क) “सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर” कविता में कहा गया है कि वर्षा पर सारे संसार की शोभा निर्भर है। वर्षा के अभाव में मानव जीवन और पशु-पक्षियों पर क्या-क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर:

(विद्यार्थी अपनी कल्पना के आधार पर उत्तर लिखें।)

‘सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर’ पंक्ति का मतलब है कि पूरे संसार की सुंदरता वर्षा पर निर्भर करती है। यह पंक्ति वर्षा के महत्व को दिखाती है।

यदि वर्षा नहीं होगी तो:

- मनुष्य को पानी, खेती और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।
- पशु-पक्षियों और पौधों का जीवन कठिन हो जाएगा।

इसलिए वर्षा का होना बहुत जरूरी है और यह जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।





(ख) “बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं” – बिजली चमकना और बादल का गरजना प्राकृतिक घटनाएँ हैं। इन घटनाओं का लोगों के जीवन पर क्या-क्या प्रभाव हो सकता है?

(संकेत – आप सकारात्मक और नकारात्मक यानी अच्छे और बुरे, दोनों प्रकार के प्रभावों के बारे में सोच सकते हैं।)

उत्तर:

(विद्यार्थी अपनी कल्पना के आधार पर उत्तर लिखें।)

बिजली चमकना और बादल गरजना प्राकृतिक घटनाएँ हैं। इनका मानव जीवन और प्रकृति पर अच्छे और बुरे दोनों तरह का असर पड़ सकता है।

- **सकारात्मक असर** – जब ये वर्षा का संकेत देते हैं, तो ये प्राकृतिक जीवन के लिए फायदेमंद होते हैं। यह ताजगी और वृद्धि दिखाते हैं।
- **नकारात्मक असर** – कभी-कभी ये भय, चिंता और प्राकृतिक आपदाओं का कारण भी बन सकते हैं। इस तरह ये घटनाएँ दोनों रूपों में असर डालती हैं।

(ग) “करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे” इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए वर्षा आने पर पक्षियों और जीवों की खुशी का वर्णन कीजिए। वे अपनी प्रसन्नता कैसे व्यक्त करते होंगे?

उत्तर:

(विद्यार्थी अपनी कल्पना के आधार पर उत्तर लिखें।)

‘करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे’ पंक्ति वर्षा क्रतु में प्राकृतिक जीवन और प्रसन्नता को दिखाती है।

- वर्षा आने पर मोर पंख फैलाकर नृत्य करते हैं।
- पपीहा, बुलबुल और छोटे पक्षी अपनी खुशी में मीठी आवाज में गीत गाते हैं।
- मेंढक वर्षा की बूँदों पर सुरीले गीत गाने लगते हैं।
- हंस पानी में पंक्ति बनाकर चलते हैं और सुंदर लगते हैं।

इस तरह सभी पक्षी और जीव वर्षा के आने पर अपनी खुशी नृत्य और गीत के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

आपकी रचनाएँ

(क) कविता में वर्णन है कि मोर नृत्य कर रहे हैं और मेंढक सुगीत गा रहे हैं। इस दृश्य को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

उत्तर:

(विद्यार्थी अपनी कल्पना के आधार पर उत्तर लिखें।)

वर्षा के आने पर मोर अत्यंत प्रसन्न हो कर नृत्य करने लगते हैं। अपने पंखों की फैलाकर तथा गरदन को ऊपर-नीचे करके अपनी खुशी व्यक्त करते हुए नृत्य करते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे वर्षा का स्वागत कर रहा हों। दूसरी ओर मेंढक सुंदर गीत गाने लगते हैं। मेंढक टर्र-टर्र की ध्वनि निकालते हुए गीत गाते से प्रतीक होते हैं, जो पूरे वातावरण में गूँजता है।





(ख) वर्षा से जुड़ी किसी प्राचीन कथा या लोककथा को इस कविता से जोड़कर एक कहानी तैयार कीजिए।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं इस कविता से जोड़कर एक कहानी लिखने का प्रयास करें।

कहानी: संगीत का जादू और इंद्रदेव का वरदान

बहुत समय पहले, अकालपुर नाम का एक गाँव था। जैसा उसका नाम था, वैसा ही उसका हाल था। गाँव में कई सालों से बारिश की एक बूँद भी नहीं गिरी थी। धरती गर्मी से फट गई थी, पेड़-पौधे सूखकर काँटा बन गए थे और नदी-तालाब सिर्फ धूल से भरे गड्ढे बनकर रह गए थे। गाँव के लोग और जानवर पानी के लिए तरस रहे थे।

उसी गाँव में आरव नाम का एक लड़का रहता था। उसे संगीत से बहुत प्यार था और उसकी आवाज़ में जादू था। एक दिन दुखी होकर वह अपनी बूँदी दादी के पास बैठा। दादी ने उसे एक पुरानी कहानी सुनाई। उन्होंने बताया, "बेटा, कहते हैं कि जब संगीत सच्चे मन से गाया जाता है, तो वह सीधे बादलों के राजा इंद्रदेव तक पहुँचता है और वे प्रसन्न होकर वर्षा का वरदान देते हैं।"

आरव ने ठान लिया कि वह अपनी संगीत की शक्ति से अपने गाँव को इस संकट से बचाएगा।

अगले दिन सुबह-सुबह वह गाँव के सूखे हुए सबसे बड़े पेड़ के नीचे बैठ गया और अपनी आँखें बंद करके गाना शुरू किया। जैसे ही उसका सुरीला राग हवा में गूँजा, एक चमत्कार होने लगा।

(कविता का पहला भाग) आरव के गीत का असर सबसे पहले आसमान पर हुआ। धीरे-धीरे नभ में एक अनूठी छटा छाने लगी और काले-काले बादल (घनघोर) धिर आए। तभी अचानक बिजली ज्झोर से चमकने लगी और बादल गरजने लगे। और फिर... टप... टप... पानी बरसने लगा और देखते ही देखते सूखे हुए झारने भी बहने लगे।

(कविता का दूसरा भाग) बारिश की बूँदों के साथ ठंडी हवा चलने लगी और सूखे पेड़ों की डालियाँ सब खुशी से हिलने लगीं। गाँव की औरतें, जो खेतों को उदास देखती रहती थीं, खुशी के मारे अपने बागों में सुंदर गीत गाने लगीं। सूखे तालाबों में जब पानी भरा तो तालों में रहने वाले जीव-जंतु (जलचर) बहुत प्रसन्न हो गए। पपीहे, जो गर्मी से बेहाल थे, अपनी सुरीली आवाज में गाने लगे, मानो वे अपना ग्रीष्म का ताप खोते हुए बारिश को धन्यवाद दे रहे हों।

(कविता का तीसरा भाग) जंगल में जैसे कोई उत्सव शुरू हो गया। बन में सारे मोर अपने पंख फैलाकर नृत्य करने लगे। तालाबों के किनारे बैठे मेंढक भी टर्ट-टर्ट करके ऐसे गा रहे थे, मानो वे अपने प्यारे सुगीत से सबको लुभा रहे हों। सूखी पड़ी क्यारियों में गुलाब के फूल खिल गए और अपनी खुशबू (सौरभ) हवा में उड़ाने लगे। पूरे गाँव में चारों तरफ खुशी और आमोद छा गया।

(कविता का चौथा भाग) दूर आसमान में हंस एक सुंदर कतार बाँधे उड़ते हुए जा रहे थे, जैसे वे भी इस खुशी में शामिल हों। गाँव के किसान, जिनकी आँखों में कल तक निराशा थी, आज मन को हरने वाले गीत गाते हुए अपने खेतों की ओर चल पड़े।

सब लोग समझ गए कि यह आरव के सच्चे संगीत का ही जादू था। उस दिन के बाद सबने माना कि सचमुच इस धरती पर वर्षा की बहार अनोखी है, और सारे जगत की शोभा इसी के ऊपर निर्भर है।





इस तरह आरव के संगीत ने एक पुरानी कथा को सच कर दिखाया और अकालपुर गाँव फिर से हरा-भरा और खुशहाल हो गया।

(ग) इस कविता से प्रेरणा लेकर एक चित्र बनाइए। उसमें आपने क्या-क्या बनाया है और क्यों?

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं कविता से प्रेरणा लेकर एक चित्र बनाएँ तथा उसमें क्या-क्या बनाया और क्यों बनाया, उसका कारण भी बताएँ।



मैंने इस चित्र में क्या-क्या बनाया है और क्यों:

1. नभ में घनघोर बादल और बिजली चमकना (कविता का अंश 1)
2. पानी का बरसना और झरने बहना (कविता का अंश 1)
3. ठंडी हवा और हिलती डालियाँ
4. बागों में गुलाब के फूल (कविता का अंश 3)
5. तालों में जीव जलचर (मेंढक) (कविता का अंश 2 और 3)
6. वन में नृत्य करते मोर (कविता का अंश 3)
7. हंसों की कतार (कविता का अंश 4)
8. किसान और उनका मनहर गीत (कविता का अंश 4)
9. इंद्रधनुष
10. संगीत का जादू (मेरी कहानी से प्रेरणा): चित्र के केंद्र में एक युवा व्यक्ति बांसुरी बजा रहा है, और उसकी बांसुरी से संगीत के नोट्स (स्वरलिपि) निकलते हुए ऊपर बादलों की ओर जा रहे हैं। यह मेरी सुनाई गई कहानी के नायक आरव और उसके संगीत के जादू का प्रतीक है, जो वर्षा को आकर्षित करता है। यह एक रचनात्मक तत्व है जो कविता के प्राकृतिक दृश्यों को एक जादुई स्पर्श देता है।

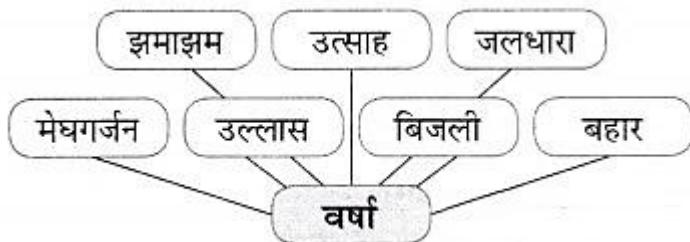




शब्द से जुड़े शब्द

- अपने समूह में चर्चा करके 'वर्षा' से जुड़े शब्द नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए-

उत्तर:



(विद्यार्थी समूह में चर्चा कर अन्य शब्द भी लिख सकते हैं।

कविता की रचना

“वर्षा – बहार सब के, मन को लुभा रही है”

इस पंक्ति में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। 'वर्षा' एक ऋतु का नाम है। 'बहार' 'वसंत' का दूसरा नाम है। यहाँ 'वर्षा' और 'बहार' को एक साथ दिया गया है जिससे वर्षा ऋतु की सुंदरता को स्पष्ट किया जा सके।

इस कविता में ऐसी ही अन्य विशेषताएँ छिपी हैं, जैसे- कविता की कुछ पंक्तियाँ सरल वाक्य के रूप में ही हैं तो कुछ में वाक्य संरचना सरल नहीं है।

- अपने समूह के साथ मिलकर इस कविता की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर:

'वर्षा-बहार' कविता की अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. इस कविता में वर्षा के मौसम की सुंदरता और वर्षा के सकारात्मक प्रभावों का चित्रण किया गया है।
2. कविता में जीवों, पक्षियों और पौधों की खुशी व उल्लास का वर्णन किया गया है।
3. प्राकृतिक सौंदर्य; जैसे- बूँदों का गिरना, बादलों की गड़गड़ाहट और जंगल की ताजगी का वर्णन किया गया है।
4. प्रकृति और मानव के बीच गहरे संबंध को व्यक्त किया गया है।
5. नृत्य और संगीत को प्रतीकात्मक रूप में अभिव्यक्त किया गया है।
6. कविता यह सिखाती है कि बदलाव का स्वागत खुशी, उल्लास और उत्सव के रूप में करना चाहिए।

कविता का सौंदर्य

(क) नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इनमें कुछ शब्द हटा दिए गए हैं और साथ में मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द भी दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक शब्द से वह पंक्ति पूरी करके देखिए। जो शब्द उस पंक्ति में ज़ंच रहे हैं उन पर धेरा बनाइए।

..... - बहार सब के मन को लुभा रही है (बारिश, बरसात, बरखा, वृष्टि)

..... में छटा अनूठी, घनधोर छा रही है (आकाश, गगन, अंबर, व्योम)





बिजली चमक रही है, गरज रहे हैं (मेघ, जलधर, घन, जलद)

..... बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं (जल, नीर, सलिल, तोय)

उत्तर:

- - बहार सब के मन को लुभा रही है (बारिश, बरसात, बरखा, वृष्टि)
- मैं छटा अनूठी, घनघोर छा रही है (आकाश, गगन, अंबर, व्योम)
- बिजली चमक रही है, गरज रहे हैं (मेघ, जलधर, घन, जलद)
- बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं (जल, नीर, सलिल, तोय)

(ख) अपने समूह में विमर्श करके पता लगाइए कि कौन-से शब्द रिक्त स्थानों में सबसे अधिक साथियों को जँच रहे हैं और क्यों?

उत्तर: विद्यार्थी स्वयं अपने समूह में चर्चा करके बताएँगे।

विशेषण

“बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब”

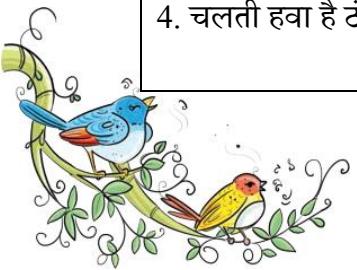
इस पंक्ति में ‘सुंदर’ शब्द ‘गीत’ की विशेषता बता रहा है अर्थात् यह ‘विशेषण’ है। ‘गीत’ एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है, अर्थात् यह ‘विशेष्य’ शब्द है।

(क) नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों की पहचान करके लिखिए-

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1. नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है	अनूठी	छटा
2. चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर		
3. मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे		
4. चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब		

उत्तर:

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1. नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है	अनूठी	छटा
2. चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर		कतार
3. मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे		सुगीत
4. चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब	ठंडी सब	हवा डालियाँ





(ख) नीचे दिए गए विशेष्यों के लिए अपने मन से विशेषण सोचकर लिखिए-

1. वर्षा
2. पानी
3. बादल
4. डालियाँ
5. गुलाब

उत्तर:

1. मूसलाधार, हल्की
2. स्वच्छ, शीतल
3. काले, घने
4. मङ्गबूत, हरी
5. सुगंधित, लाल

ऋतु और शब्द

“फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते”

‘ताप’ शब्द ग्रीष्म ऋतु से जुड़ा शब्द है। भारत में मुख्य रूप से छह ऋतुएँ क्रम से आती-जाती हैं। लोग इन ऋतुओं में कुछ विशेष शब्दों का उपयोग करते हैं। नीचे दिए गए शब्दों को पढ़कर कौन-सी ऋतु का स्मरण होता है? इन शब्दों को तालिका में उपयुक्त स्थान पर लिखिए-

उत्तर:

वसंत ऋतु (सामान्यतः मार्च-अप्रैल)	हरियाली, बवार, बहार
ग्रीष्म ऋतु (सामान्यतः मई-जून)	जंठ, लू, तपन, आँधी, ताप
वर्षा ऋतु (सामान्यतः जुलाई-अगस्त)	रिमझिम, झड़ी, शीतलता, सावन, वृष्टि, बादल फटना
शरद ऋतु (सामान्यतः सितंबर-अक्टूबर)	उमस
हेमंत ऋतु (सामान्यतः नवंबर-दिसंबर)	धुंध, ठंडक
शिशिर ऋतु (सामान्यतः जनवरी-फरवरी)	ओस, कोहरा, कड़ाके की ठंड, धूप, ठिठुरना, हिमपात, पाला, जाड़ा





पाठ से आगे

आपकी बात

(क) वर्षा के समय आपके क्षेत्र में क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर:

(विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर स्वयं उत्तर लिखें।)

वर्षा के समय हमारे क्षेत्र में निम्नलिखित परिवर्तन आते हैं-

1. वर्षा के कारण गरमी का असर कम हो जाता है और मौसम में ठंडक आ जाती है।
2. पेड़-पौधे हरे-भरे और ताजे हो जाते हैं।
3. नदियों, झीलों, तालाबों आदि जल स्रोतों में पानी का स्तर बढ़ जाता है।
4. कीड़े-मकोड़े और मच्छर अधिक सक्रिय हो जाते हैं।

(ख) बारिश के चलते स्कूल आने-जाने के समय के अनुभव बताइए। किसी रोचक घटना को भी साझा कीजिए।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं के अनुभव साझा करते हुए एक रोचक घटना बताएँ।

बारिश में स्कूल जाने का अनुभव

बारिश के दिनों में स्कूल जाना किसी रोमांचक मिशन की तरह लगता था। इसकी तैयारी सुबह से ही शुरू हो जाती थी।

सुबह की तैयारी:

- सुबह नींद खुलते ही बाहर बादलों की गरज और खिड़की पर पानी की टप-टप सुनकर लगता, "आज छुट्टी होगी!"
- लेकिन मम्मी की आवाज आती, "चलो उठो, स्कूल के लिए रेनकोट और छाता निकाल लिया है।"
- स्कूल की यूनिफॉर्म के ऊपर रंग-बिरंगा रेनकोट पहनना और पैरों में गम्बूज या सैंडल पहनना मजेदार लगता था।
- किताबें गीली न हों इसलिए बस्ता प्लास्टिक की थैली में रखा जाता था।

स्कूल का रास्ता:

- **कागज की नाव:** घर के पास बहते पानी में नाव चलाना बहुत पसंद था। दोस्त अपनी-अपनी नाव से रेस लगाते।
- **छपाक-छपाक:** सड़कों पर पानी में कूदना और छपाक-छपाक करना मजेदार था, भले कपड़े गंदे हो जाएँ।
- **छाते से लड़ाई:** तेज हवा में छाता उल्टा हो जाता था। उसे सही करने की कोशिश में खुद भीग जाते। कभी दो दोस्त एक ही छाते में चलने की कोशिश करते, जो मजेदार होता।
- **ट्रैफिक और पानी:** ज्यादा बारिश होने पर सड़कों में पानी भर जाता और स्कूल बस या वैन फंस जाती। उस समय बस में बैठकर बारिश देखना और दोस्तों के साथ बातें करना अच्छा लगता था।

वापसी का सफर:

- स्कूल से घर लौटते समय ज्यादा मज्जा आता था। हल्की बारिश में जानबूझकर भीगते हुए घर आते।





- घर पहुँचकर सूखे कपड़े पहनना और मम्मी के हाथ के बने गरम पकोड़े और चाय का स्वाद लेना, दिन की सारी थकान मिटा देता था।

(ग) वर्षा क्रतु में आपको क्या-क्या करना अच्छा अगता है और क्या-क्या नहीं कर पाते हैं?

उत्तर:

(विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार उत्तर लिखें।)

वर्षा क्रतु में हमें निम्नलिखित क्रियाकलाप करना अच्छा लगता है-

- चाय और गरमागरम पकोड़े खाना।
- बारिश में नहाना।
- कागज की नाव बनाकर पानी में बहाना।
- संगीत सुनना।
- परिवार के साथ समय बिताना।

वर्षा क्रतु में हम बाहर घूमने नहीं जा पाते, बाहर खेल नहीं पाते, कपड़े नहीं सूखा पाते, मनोरंजन नहीं कर पाते।

(घ) बारिश के मौसम में आपके आस-पड़ोस के पशु-पक्षी अपनी सुरक्षा कैसे करते हैं? उन्हें कौन-कौन सी समस्याएँ होती हैं?

उत्तर:

(विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर उत्तर लिखें।)

बारिश के मौसम में हमारे आस-पड़ोस के पशु-पक्षी अपनी सुरक्षा आश्रय ढूँढ़कर, भोजन की तलाश करके और अपनी शारीरिक गतिविधियों को अनुकूलित करके करते हैं। बारिश के मौसम में उनका व्यवहार और उनकी जीवन शैली थोड़ी बदल जाती है।

बारिश के मौसम में पशु-पक्षियों को कई समस्याएँ आती हैं; जैसे—कीचड़ और जलभराव में आने-जाने की समस्या, भोजन ढूँढ़ने की समस्या, तेज़ आँधी, तूफान व बिजली की गर्जन से डर, अपने बच्चों की सुरक्षा का डर, स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ आदि।

(ङ) अपने समूह के साथ मिलकर वर्षा क्रतु पर आधारित एक कविता की रचना कीजिए। उसमें अपने घर और आस-पड़ोस से जुड़ी हुई बातें सम्मिलित कीजिए।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं अपने मित्रों के साथ मिलकर वर्षा क्रतु पर आधारित एक कविता तैयार करें।

शीर्षक: हमारे मोहल्ले की बारिश

(समूह का पहला सदस्य शुरू करता है...)

आसमान पर बादल छाए, ठंडी-ठंडी हवा ले आए।

छत पर चढ़कर देखा जब, रिमझिम बूँदें मन को भाए।





(दूसरा सदस्य मोहल्ले की आवाजें जोड़ता है...)

टिन की छत पर टप-टप पानी,
कहता है अपनी कहानी।
भरकर बहता घर का परनाला,
लगता इसका शोर निराला।

(तीसरा सदस्य घर के अंदर का दृश्य बताता है...)

रसोई से खुशबू आई, मम्मी ने गरमा-गरम पकोड़ी बनाई।
कहतीं, "बाहर मत भीगो ज्यादा,
सर्दी-खाँसी का बढ़ जाएगा आधा!"

(चौथा सदस्य गली के बच्चों की मस्ती बताता है...)

गली में जब भर आया पानी,
बच्चों ने की खूब मनमानी।
छप-छप करते, खूब उछलते,
कागज की एक नाव चलाई।

(पाँचवाँ सदस्य बारिश के बाद का दृश्य जोड़ता है...)

पेड़-पौधे सब धुल से गए हैं,
हरे-भरे और खिल से गए हैं।
दीवारों पर काई जमती,
देखो कुदरत कैसी रचती।

(सब मिलकर कविता समाप्त करते हैं...)

यही है बारिश का मौसम,
कभी कीचड़, कभी थोड़ी उलझन।
पर इसकी मस्ती है सबसे न्यारी,
ये वर्षा ऋतु है हमको प्यारी!

साक्षात्कार

“गाते हैं गीत कैसे लेते किसान मनहर।”

मान लीजिए कि आप अपने विद्यालय की पत्रिका के पत्रकार हैं। आप एक किसान का साक्षात्कार कर रहे हैं जो वर्षा के आने पर अपने खेतों में गीत गा रहा है।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर उस किसान के साक्षात्कार के लिए कुछ प्रश्न लिखिए।

(संकेत – आपका क्या नाम है? आप क्या काम करते हैं? आप काम करते समय गीत क्यों गाते हैं? आदि)





उत्तर:

किसान के साक्षात्कार के लिए कुछ प्रश्न इस प्रकार हैं-

पत्रकार : नमस्कार ! आपका क्या नाम है?

किसान : जी नमस्कार, मेरा नाम गिरधारी लाल है। पत्रकार : आप क्या काम करते हैं?

किसान : जी, मैं एक किसान हूँ और खेती-बाड़ी का काम करता हूँ।

पत्रकार : आप खेत में कितने समय काम करते हैं?

किसान : मैं सुबह-शाम चार-पाँच घंटे खेत में काम करता हूँ और बाकी समय खेत की रखवाली और रख-रखाव का ध्यान रखता हूँ।

पत्रकार : आप काम करते समय गीत क्यों गाते हैं?

किसान : बारिश की ऋतु में जब खेतों में हरियाली छा जाती है तो मन खुशी से झूम उठता है। मेरी मेहनत रंग लाने वाली होती है। इस समय स्वयं पर नियंत्रण नहीं कर पाता हूँ और खुशी के कारण गीत गाने लगता हूँ।

पत्रकार : बारिश के मौसम में गीत गाने से क्या होता है?

किसान : जब बारिश के मौसम में खेतों में गीत गाता हूँ तो मुझे मानसिक शांति मिलती है।

पत्रकार : बहुत अच्छा ! गीतों का कोई खास संदेश होता है?

किसान : जी, मैं अपने गीतों के माध्यम से मुख्य रूप से प्रकृति का आभार व्यक्त करता हूँ।

पत्रकार : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, आपके विचार हमें बहुत अच्छे लगे। हम आपकी अच्छी फसल और मंगलमय जीवन की कामना करते हैं।

किसान : धन्यवाद! आप भी खुशहाल और सुखी रहें।

परीक्षा तैयारी किट

(ख) अपने समूह के साथ मिलकर इस साक्षात्कार को अभिनय द्वारा प्रस्तुत कीजिए। आपके समूह का कोई सदस्य किसान की भूमिका निभा सकता है। अन्य सदस्य पत्रकारों की भूमिका निभा सकते हैं।

उत्तर:

विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ मिलकर इस साक्षात्कार को अभिनय द्वारा स्वयं प्रस्तुत करें।

वर्षा के दृश्य

(क) वर्षा के उन दृश्यों की सूची बनाइए जिनका उल्लेख इस कविता में नहीं किया गया है। जैसे आकाश में इंद्रधनुष।

उत्तर:

वर्षा के वे दृश्य जिनका उल्लेख कविता में नहीं किया गया है, वे हैं- आकाश में इंद्रधनुष का दिखाई देना, बादलों का रंग बदलना; जैसे- काले-काले धुँधले, सफेद आदि; नदी, तालाब, खेत आदि का पानी से भर जाना।

(ख) वर्षा के समय आकाश में बिजली पहले दिखाई देती है या बिजली कड़कने की ध्वनि पहले सुनाई देती है या दोनों साथ-साथ दिखाई – सुनाई देती है? क्यों? पता कीजिए।

उत्तर:





वर्षा के समय आकाश में पहले बिजली चमकती है और फिर उसकी गड़गड़ाहट सुनाई देती है। ये दोनों घटना एक साथ होती हैं, लेकिन हमें अलग समय पर दिखाई और सुनाई देती हैं।

- **बिजली की चमक** प्रकाश है, जो लगभग 3 लाख किलोमीटर प्रति सेकंड की तेज़ रफ्तार से चलती है। इसलिए यह हमारी आँखों तक तुरंत पहुँच जाती है।
- **बिजली की गड़गड़ाहट** ध्वनि है, जिसकी गति लगभग 343 मीटर प्रति सेकंड है। यह प्रकाश की तुलना में बहुत धीमी है।

इसलिए हमें पहले बिजली दिखाई देती है और कुछ सेकंड बाद उसकी आवाज़ सुनाई देती है।

(ग) आपने वर्षा से पहले और वर्षा के बाद किसी पेड़ या पौधे को ध्यान से अवश्य देखा होगा। आपको कौन-कौन से अंतर दिखाई दिए?

उत्तर:

(विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर उत्तर लिखें।)

वर्षा के पहले और वर्षा के बाद पेड़ या पौधे की स्थिति में अंतर-

वर्षा के पहले पेड़ या पौधे की स्थिति	वर्षा के बाद पेड़ या पौधे की स्थिति
1. पत्तों पर धूल और गंदगी जमा होती है, जिससे वे थोड़े मटमैले दिखते हैं।	1. वर्षा के पानी से पत्ते धूल जाते हैं और चमकने लगते हैं। जिससे पौधे ताज़ा और हरे दिखाई देते हैं।
2. कुछ पत्ते पीले या मुरझाए हुए होते हैं।	2. पौधे के सभी पत्ते हरे और नए जैसे दिखाई देते हैं।
3. पानी और नमी की कमी के कारण पौधे धीमी गति से बढ़ते हैं।	3. पानी मिलने से पौधे की वृद्धि तेज़ हो जाती है। उस पर नए पत्ते और कोपलें दिखाई देने लगते हैं।
4. उसकी मिट्टी फटी हुई या रुखी-सूखी लगती है।	4. वर्षा के बाद मिट्टी में नमी आ जाती है जो पौधों को पोषण देती है।

(घ) “चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर”

कविता में हंसों के कतार में अर्थात पंक्तिबद्ध रूप से चलने का वर्णन किया गया है। आपने किन-किन को और कब-कब पंक्तिबद्ध चलते हुए देखा है? (संकेत- चींटी, गाड़ियाँ, बच्चे आदि)

उत्तर:

(विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर उत्तर लिखें।)

हमने चींटियाँ, बच्चे, गाड़ियाँ और सैनिकों को पंक्तिबद्ध चलते हुए देखा है।

- **चींटियाँ** – जब अपना खाना ले जाती हैं या बिल से बाहर आती हैं, तो वे एक पंक्ति में बिना टकराए चलती हैं। इससे मेहनत, सहयोग और सामूहिकता दिखाई देती है।
- **बच्चे** – प्रार्थना सभा या कक्षा में जाते-आते समय दो-दो की कतार में अनुशासन के साथ चलते हैं। इससे अनुशासन और एकरूपता सिखाई जाती है।





- **गाड़ियाँ** – सड़क, रैलियों या पेरेड में एक के पीछे एक चलती हैं। यह अनुशासन और सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन सिखाती हैं।
- **सैनिक** – पेरेड या गश्त के समय कदम मिलाकर पंक्तिबद्ध चलते हैं। इसे देखकर गर्व और प्रेरणा महसूस होती है।

वर्षा में ध्वनियाँ

(क) कविता में वर्षा के अनेक दृश्य दिए गए हैं। इन दृश्यों में कौन-कौन सी ध्वनियाँ सुनाई दे रही होंगी? अपनी कल्पना से उन ध्वनियों को कक्षा में सुनाइए।

उत्तर:

कविता में वर्षा के दृश्यों में सुनाई देने वाली ध्वनियाँ निम्नलिखित हैं–

1. बारिश की बूँदों की टप टप या झमाझम की आवाज़ – टप... टप... टप... झम... झम...
2. तेज़ हवा के झाँकों की आवाज़ – स्वर्ररर... शशश...
3. पक्षियों की चहचहाहट या कोयल की कूक – चूँ... चूँ... चूँ... कुहू... कुहू...
4. मेंढकों की टर्र-टर्र टर्र... टर... टर...
5. बिजली की चमक और बादल की गड़गड़ाहट – गड़गड़... कड़क !

(विद्यार्थी अपनी कल्पना से इन ध्वनियों को कक्षा में सुनाएं।)

(ख) “मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे”

कविता में मेंढकों की टर्र-टर्र को भी प्यारा गीत कहा गया है। आपके विचार से बेसुरी ध्वनियाँ भी कब-कब अच्छी लगने लगती हैं?

उत्तर:

हमारे विचार से कभी-कभी बेसुरी ध्वनियाँ भी अच्छी लगने लगती हैं; जैसे- बच्चों की बात या गाना। बच्चे जब गाते हैं तो वे सुर में नहीं गाते तब भी उनका गाना प्यारा लगता है। बुर्जुगों की टूटी-फूटी लोरी में सुर न भी हो लेकिन उनमें मिठास, अपनापन और स्नेह होता है। किसी अपने की आवाज़ मन को सुकून देने वाली होती है, वह जब कुछ गुनगुनाता है तो बहुत अच्छा लगता है।

सूजन

‘बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है’

‘आमोद’ या ‘मोद’ दोनों शब्दों का अर्थ होता है, आनंद, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता। कविता में वर्षा क्रतु में ‘आमोद’ के दृश्यों का वर्णन किया गया है। कविता के इन दृश्यों को हम नीचे दिए गए उदाहरण की तरह अनुच्छेद में भी लिख सकते हैं–

‘हवा की ठंडक थी, बारिश की रिमझिम बूँदें गिर रही थीं, मोर नृत्य कर रहे थे और मेंढक खुश होकर गाना गा रहे थे। ये सभी मिलकर वर्षा क्रतु को एक उत्सव जैसा बना रहे थे। बागों में गुलाब की खुशबू और आम के पेड़ों पर नए फल देखकर पक्षी और लोग, सभी प्रसन्न हो गए थे। किसान अपने खेतों में काम करते हुए इस प्राकृतिक आनंद के भागीदार बन रहे थे।’





- अब नीचे दिए गए 'आमोद' से जुड़े विभिन्न दृश्यों का एक-एक अनुच्छेद में वर्णन कीजिए-

उत्तर:

बारिश के बाद उपवन में सैर

बारिश के बाद उपवन में सैर करना अत्यंत सुखद अनुभव होता है। बारिश के बाद उपवन सुंदर दिखाई देता है क्योंकि पेड़-पौधों के पत्तों पर बारिश की बूँदें मोतियों की तरह चमकती हुई दिखाई देती हैं। मिट्टी से उठने वाली सोंधी सोंधी खुशबू मन की आनंदित कर देती है। चारों ओर हरियाली दिखाई देती है। पेड़ों और फूलों की रंगत लौट आती है। पक्षी पेड़ों पर बैठकर चहचहाने लगते हैं। हवा शीतल और ताजा लगती है। ऐसे शांत और सुंदर वातावरण में मन भी प्रसन्न हो जाता है। बारिश के बाद उपवन में सैर करना केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं है बल्कि यह प्रकृति से एक संवाद है, जिसमें मन को ताजगी और आत्मा को सुकून मिलता है।

(विद्यार्थी अन्य विषयों पर स्वयं अपने अनुभव के आधार पर अनुच्छेद लिखें।)

वर्षा से जुड़े गीत

'बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब'

'गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहरा।'

• हमारे देश में वर्षा के आने पर अनेक गीत और लोकगीत गाए जाते हैं। अपने समूह के साथ मिलकर वर्षा से जुड़े गीत व लोकगीत ढूँढ़िए और लिखिए। इस कार्य के लिए आप अपने परिजनों, शिक्षकों, इंटरनेट और पुस्तकालय की भी सहायता ले सकते हैं।

• सभी समूहों द्वारा एकत्रित गीतों को संकलित करके वर्षा – गीतों की एक पुस्तिका भी तैयार कीजिए।

उत्तर:

• विद्यार्थी अपने समूह के साथ मिलकर अपने परिजनों, शिक्षकों, इंटरनेट तथा पुस्तकालय आदि की सहायता से वर्षा से जुड़े गीत व लोकगीत ढूँढ़कर लिखें।

वर्षा ऋतु पर आधारित गीत व लोकगीत का संकलन

1. हिन्दी फिल्मी गीत (इंटरनेट और परिजनों की सहायता से)

यह कुछ ऐसे गीत हैं जो हिन्दी फिल्मों में बहुत लोकप्रिय हुए हैं। आपके माता-पिता और बड़े-बुजुर्गों को इनमें से कई गीत याद होंगे।

- **गीत: रिमझिम गिरे सावन**
 - **फिल्म:** मंजिल (1979)
 - **विशेषता:** यह गीत मुंबई की बारिश में भीगते हुए अहसास और यादों को बहुत खूबसूरती से दर्शाता है।
- **गीत: प्यार हुआ इकरार हुआ है**
 - **फिल्म:** श्री 420 (1955)
 - **विशेषता:** यह एक सदाबहार गीत है जिसे एक छाते के नीचे फिल्माया गया है और यह बारिश में प्यार का प्रतीक बन गया है।
- **गीत: एक लड़की भीगी भागी सी**
 - **फिल्म:** चलती का नाम गाड़ी (1958)





- **विशेषता:** यह एक मज़ेदार और चुलबुला गीत है जो बारिश की एक रात की कहानी बताता है।
- **गीत:** बरसो रे मेघा मेघा
 - **फिल्म:** गुरु (2007)
 - **विशेषता:** यह गीत बारिश के आने की खुशी और उत्सव को दिखाता है। इसमें प्रकृति के सौंदर्य का सुंदर वर्णन है।
- **गीत:** घनर घनर घिर आए बदरा
 - **फिल्म:** लगान (2001)
 - **विशेषता:** यह गीत बारिश का इंतज़ार कर रहे किसानों की उम्मीद और बादल घिर आने पर उनकी खुशी को दर्शाता है।

2. लोकगीत (शिक्षकों, पुस्तकालय और परिजनों की सहायता से)

लोकगीत हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। ये गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी गाए जाते हैं और इनमें मिट्टी की खुशबू होती है।

- **लोकगीत का प्रकार:** कजरी (मुख्यतः उत्तर प्रदेश और बिहार में गाया जाता है)
 - **बोल:** "सावन की रित आईरे, सखी झूला झूलाओ" या "रिमझिम बरसे बदरवा, जियरा मोरा तरसे"
 - **विशेषता:** कजरी गीत सावन के महीने में गाए जाते हैं। इनमें अक्सर एक महिला की अपने प्रिय से दूर होने की पीड़ा या सावन के झूलों का वर्णन होता है।
- **लोकगीत का प्रकार:** सावन गीत
 - **बोल:** "अम्मा मेरे बाबा को भेजो जी कि सावन आया"
 - **विशेषता:** इन गीतों में नई-विवाहित लड़कियाँ सावन में अपने मायके जाने की इच्छा व्यक्त करती हैं।
- **लोकगीत का प्रकार:** राजस्थानी लोकगीत
 - **बोल:** "बरसो म्हारा इंदर राजा, थारे भरोसे खेती कीन्ही"
 - **विशेषता:** राजस्थान जैसे सूखे प्रदेश में बारिश का बहुत महत्व है। यह गीत इंद्र देवता से बरसने की प्रार्थना है ताकि फसलें अच्छी हों।
- **लोकगीत का प्रकार:** पंजाबी लोकगीत (तीज के गीत)
 - **बोल:** "सावन दा महीना, बागीं मोर बोल्दे"
 - **अर्थ:** सावन का महीना है और बागों में मोर बोल रहे हैं।
 - **विशेषता:** पंजाब में सावन के महीने में 'तीज' (तियां) का त्योहार मनाया जाता है, जहाँ महिलाएँ झूला झूलती और गीत गाती हैं।

3. कविताएँ जो गीत बन गईं (पुस्तकालय और शिक्षकों की सहायता से)

कुछ कविताएँ इतनी लोकप्रिय हुईं कि उन्हें गीतों की तरह गाया जाने लगा।

- **कविता:** मेघ आए बड़े बन-ठन के, सँवर के
 - **कवि:** सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
 - **विशेषता:** यह कविता बादलों के आगमन की तुलना एक ऐसे मेहमान से करती है जो शहर से सज-धज कर गाँव आया हो।
- **कविता/बालगीत:** रिमझिम-रिमझिम वर्षा आई
 - **कवि:** हरिवंशराय बच्चन





- **विशेषता:** यह बच्चों के लिए एक बहुत ही सरल और प्यारा गीत है, जिसमें बारिश के आने का सुंदर वर्णन है।
- विद्यार्थी सभी समूहों द्वारा एकत्रित गीतों को संकलित करके वर्षा-गीतों की एक पुस्तिका भी तैयार करें।

आज की पहली

आपने वर्षा से जुड़ी एक कविता पढ़ी है। अब भारत की विभिन्न ऋतुओं से जुड़ी कुछ पहेलियाँ पढ़िए और इन्हें बूझिए।

उत्तर:

- ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, हेमंत ऋतु, बसंत ऋतु, शिशिर ऋतु, पतझर ऋतु।

झरोखे से

- आपने जो कविता इस पाठ में पढ़ी है, उसे लिखा है मुकुटधर पांडेय ने। आइए, अब पढ़ते हैं इन्हीं की लिखी एक अन्य कविता 'ग्रीष्म' का अंश-

ग्रीष्म

बीते दिवस बसंत के, लगा ज्येष्ठ का मास
विश्व व्यथित करने लगा, रवि किरणों का त्रास,
अवनी आतप से लगी, जलने सब ही हाल
जीव, जंतु चर-अचर सब, हुए अमिल बेहाल
रवि मयूख के ताप से, झुलस गए बन बाग
सूखे सरिता सर तथा नाले, कूप तड़ाग
लगी आग पुर ग्राम में, चिंता बढ़ी अपार
नर-नारी व्याकुल बसे, भय सदैव उर धार

उत्तर:

विद्यार्थी मुकुटधर पांडेय द्वारा रचित 'ग्रीष्म' कविता को स्वयं पढ़ेंगे।

साझी समझ

- अब इस कविता पर अपने साथियों के साथ विचार- विमर्श कीजिए।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं अपने साथियों के साथ 'ग्रीष्म' कविता पर विचार-विमर्श करेंगे।

कविता 'ग्रीष्म' पर सरल चर्चा

विषय: मुकुटधर पांडेय की कविता 'ग्रीष्म' में गर्मी के तेज रूप और उसके प्रभावों को दिखाया गया है।

1. कविता का पहला प्रभाव और सार:

- कविता पढ़ते ही गर्मी की भीषणता और बेचैनी का अहसास होता है।
- शुरुआत में "बीते दिवस बसंत के" लिखा है, यानी सुखद मौसम (बसंत) खत्म हो गया और कष्टकारी गर्मी (ज्येष्ठ मास) शुरू हो गई। यह सुख के बाद दुख का संकेत देता है।

2. गर्मी का वर्णन और उसके प्रभाव:





- कवि ने गर्मी को 'त्रास' यानी डर और कठिनाई की तरह बताया है।
- धरती पर: "अवनी आतप से लगी, जलने सब ही हाल" – धरती आग की तरह जल रही है।
- जीव-जंतु पर: "जीव, जंतु चर-अचर सब, हुए अमिल बेहाल" – सभी जीव और पेड़-पौधे गर्मी से परेशान हैं।
- प्रकृति पर: "झुलस गए बन बाग", "सूखे सरिता सर तथा नाले, कूप तड़ाग" – जंगल और तालाब सूख गए।
- मनुष्यों पर: "नर-नारी व्याकुल बसे, भय सदैव उर धार" – इंसान बेचैन हैं और डर महसूस कर रहे हैं।

3. भाषा और शब्दों का प्रभाव:

- कवि ने शक्तिशाली शब्दों का इस्तेमाल किया है, जैसे 'व्यथित', 'त्रास', 'आतप', 'झुलस गए', 'व्याकुल'।
- "लगी आग पुर ग्राम में" पंक्ति का मतलब केवल आग नहीं, बल्कि बेचैनी और चिंता की भी आग है।

4. कविता का मुख्य संदेश:

- कविता सिर्फ मौसम का वर्णन नहीं करती, बल्कि दिखाती है कि जब प्रकृति प्रचंड रूप में आती है, तो इंसान और अन्य जीव असहाय हो जाते हैं।
- यह कविता जल के महत्व का भी अहसास कराती है।

5. आज के समय में प्रासंगिकता:

- आज ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मियां पहले से ज्यादा कठिन हो रही हैं।
- सूखे तालाब, झुलसे जंगल और बेचैन इंसान आज भी सच्चाई हैं।
- कविता हमें चेतावनी देती है कि अगर हम प्रकृति का सम्मान नहीं करेंगे, तो मुश्किल हालात झेलने पड़ेंगे।

समग्र विचार:

मुकुटधर पांडेय की यह कविता केवल गर्मी का वर्णन नहीं है, बल्कि यह प्रकृति की शक्ति, जल का महत्व और सभी जीवों की आपसी निर्भरता को दिखाती है। यह हमें सोचने पर मजबूर करती है कि हम प्रकृति के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं।

खोजबीन के लिए

- **वर्षा ऋतु**
<https://www.youtube.com/watch?v=T6VAVOcUbYU>
- **आँधी पानी**
<https://www.youtube.com/watch?v=v6D-QBeN2u8>
- **वसंत**
https://www.youtube.com/watch?v=_P5z-V81Yc0
- **ऋतुएँ**
<https://www.youtube.com/watch?v=iYVXaE2HHa8>

(विद्यार्थी स्वयं दिए गए लिंक पर जाकर वर्षा ऋतु, आँधी पानी, वसंत तथा ऋतुओं के बारे में पढ़कर जानकारी प्राप्त करेंगे।)

